अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 2, अप्रैल–जून 2026, पृष्ठ 259–261
जर्नल वेबसाइटः
https://anubodhan.org
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट) 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n2.2026.087

अजय शर्मा के उपन्यासों में चित्रित पारिवारिक संघर्ष और सामंजस्य : एक अध्ययन

डॉ० संजीव कुमार *

प्राप्तिः 27 जून 2026 / स्वीकृतः 30 जून 2026 / प्रकाशित: 30 जून 2026
Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).

शोध सार

परिवार मानव समाज की सबसे प्राचीन और स्थाई संस्था है। यह एक ऐसी इकाई है जो व्यक्ति, परिवेश एवं समाज के मध्य कड़ी का कार्य करती है। परिवार ही वह माध्यम है जिसके द्वारा संस्कार, मूल्य और नैतिकता एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित होते हैं। परिवार के मुख्य स्तंभ कहे जाने वाले माता-पिता अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए संतानों का पालन-पोषण तथा शिक्षा जैसी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। चूंकि भारतीय समाज में लंबे अरसे से संयुक्त परिवार की परंपरा बनी रही है, इसमें पूरे परिवार के सदस्य एक साथ रहते थे और जीवन में सामंजस्य, सहयोग तथा सम्मान का स्वस्थ वातावरण बना रहता था। किंतु समय के बदलाव के कारण सामाजिक तथा आर्थिक विषमताएं उत्पन्न हुई। औद्योगीकरण और शहरीकरण ने संयुक्त परिवार की नींव को कमजोर किया। परिणामस्वरुप संयुक्त परिवार का विघटन शुरू हुआ और एकल परिवारों की नींव मजबूत हुई। एकल परिवारों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता तो मिली किंतु इसके साथ ही तनाव, घुटन, एकाकीपन और निराशा जैसी समस्याएं भी बढीं जिसके प्रभावस्वरूप पारिवारिक संबंधों की मधुरता खत्म हो रही है। पारिवारिक सदस्यों में तनाव कुंठा जैसी ग्रंथियां उत्पन्न हो रही हैं।

बीज शब्द: परिवार, मूल्य, संघर्ष, सामंजस्य, वात्सल्य, विघटन

अजय शर्मा के उपन्यासों में पारिवारिक संबंधों की मधुरता, कटुता, निराशा तथा तनाव इत्यादि का यथार्थ चित्रण मिलता है। उन्होंने परिवार के बनते-बिगड़ते रिश्तों, रिश्तों में उपेक्षा, नई पीढ़ी-पुरानी पीढ़ी के वैचारिक संघर्ष को उजागर किया है। 'चेहरा और परछाई' उपन्यास में माता-पिता और संतान के संबंधों का मार्मिक चित्रण किया गया है। यह उपन्यास पीढ़ीगत वैचारिक संघर्षों के फलस्वरूप पारिवारिक विघटन की कहानी कहता है। विवेक अपने तरीके से अपना जीवन जीने के लिए माता-पिता को छोड़कर मुंबई चला जाता है। माता-पिता तथा संतान का वैचारिक मतभेद उनके पारिवारिक विघटन का कारण बनता है। माता की बीमारी की स्थिति में भी विवेक उनसे मिलने को असमर्थ है। बेटे के विछोह में माँ सब कुछ त्याग देती है। उसकी देखभाल करने वाली बुढ़िया विवेक को बताती है, "आपकी माँ पिछले कई दिनों से इसी हालत में पड़ी है। खाना तो त्याग दिया है। खटिया खुद छोड़ दी है और अधमरी – सी यहां पड़ी

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय केंद्र, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश
✉ डॉ० संजीव कुमार, E-mail: sanju26971@gmail.com

है। जब जरा-सी आँख खुलती है तो आप ही का नाम पुकारती है।"[1] स्पष्टतः अजय शर्मा ने पीढ़ीगत वैचारिक संघर्षों के फलस्वरूप पारिवारिक विघटन की त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया है।

'खुली हुई खिड़की' उपन्यास में अमिता के पति की मृत्यु के बाद उसके परिवार वाले उससे मुंह मोड़ लेते हैं, न तो उसके ससुराल वालों को ही बेटे की मृत्यु का दुख है और न ही उसके भाई को बहन के सुहाग के उजड़ने का दुख है। दूसरी तरफ उसकी सास है जो पति की मृत्यु के बाद अकेले ही पूरे परिवार का पालन पोषण करती है। संयुक्त परिवार में होने के बाद भी उसके बेटे, बहू अपने कर्तव्य का निर्वहन करने में असमर्थ हैं। अपनी मानसिक व्यवस्था को प्रकट करते हुए वह कहती है, "बच्चों को पाला–पोसा, अपना कर्तव्य निभाया। अब हमें पानी का गिलास देना भी इन्हें भारी लगता है। दमन तो कई सालों से घर छोड़ गया है। .....दमन और अमन को क्लेश बिल्कुल पसंद नहीं था। एक दिन दमन ने फैसला किया और किराए पर मकान लेकर रहने लगा। बहुत सालों के बाद अब अपना मकान बना लिया है। जब उसने मकान छोड़ा तो अपने कमरों में ताला मार गया था। मेरी निगाह जब भी कमरे में लटके हुए ताले पर पड़ती है तो मुझे अपनी कोख से कुछ सड़ता हुआ महसूस होने लगता है।[2] अतः संयुक्त परिवार का टूटना एक मां को किस हद तक सालता है इसका स्पष्ट चित्रण 'खुली हुई खिड़की' उपन्यास में लेखक ने किया है।

'उधड़न' उपन्यास पति–पत्नी के वैवाहिक जीवन में आए उतार-चढ़ाव की गाथा कहता है। यह रचना व्यक्तिगत संबंधों की गाथा ही नहीं, बल्कि यह आधुनिक समाज की विडंबनाओं का भी उद्घाटन करती है। सूबेदार और सूबेदारनी की प्रेम कहानी विवाह तक पहुँचती है, परंतु विवाहोत्तर जीवन में सपनों का टूटना और विश्वास का बिखरना सामने आता है।

सूबेदारनी के लिए विवाह एक सुखद भविष्य की आशा थी, लेकिन यह आशा शीघ्र ही निराशा में बदल जाती है। जिन सपनों को उसने सजाया था, वे क्षण भर में ही ध्वस्त हो जाते हैं। यहाँ लेखक ने यह दिखाया है कि विवाह से पूर्व प्रेम का स्वरूप कितना मोहक और आशावादी होता है, जबकि विवाह के बाद सामाजिक-मानसिक दबाव और धोखे के अनुभव उसे कितनी गहरी पीड़ा देते हैं, इसका उदाहरण इन पंक्तियों के माध्यम से मिलता है, "अभी मैं सोच ही रही थी कि फौजी अपने कपड़े उतार कर बिस्तर में घुस गया, ना उसने बत्ती बुझाई ना उसने घूंघट उठाया जानवरों की तरह टूट पड़ा मुझ पर।"[3] वह उसके साथ जानवरों - सा सलूक करता है। उसके शरीर के साथ खिलवाड़ कर उसे अपमानित करता है, "खेलने के बाद उसने फिर कहा तुम्हारा शरीर तो पता नहीं कैसा है, देबो का शरीर तो ऐसा है, जो मेरे जिस्म के रोम - रोम में ऊर्जा भर देता है लेकिन तुम्हारे शरीर ने तो मेरे शरीर की बची खुची ऊर्जा का कबाड़ा करके रख दिया है। सच पूछो तो मेरा तो यहां खड़ा होना ही मुश्किल हो रहा है। मैं उसकी बातें सुनकर खामोश रही। मैं तो अपने मां-बाप को दोष भी नहीं दे सकती थी क्योंकि मैंने जानबूझकर पैर पर कुल्हाड़ी नहीं मारी थी, बल्कि कुल्हाड़ी पर ही पैर मार दिया था।"[4] अतः प्रेम में मिले धोखे और अपमान की कथा 'उधड़न' में सूबेदारनी के चरित्र के माध्यम से सामने आती है। विवाह संस्था तभी स्थायी और सार्थक होती है जब उसमें प्रेम, सम्मान और त्याग की भावना विद्यमान हो। इन मूल्यों के अभाव में संबंधों का टूटना स्वाभाविक है।

सूबेदार का पर-स्त्रीगमन और कर्तव्यबोध का अभाव सूबेदारनी के जीवन को शून्य में बदल देता है। विवाहोत्तर जीवन में वह जिस प्रेम की आकांक्षा रखती है, वही उसके लिए पीड़ा और अपमान का कारण बन जाता है। परिणामस्वरूप, प्रेम पाने की लालसा में वह निरंतर भटकती रहती है और उसका अस्तित्व एक त्रासदी का रूप ले लेता है।

---

[1] चेहरा और परछाई, पृ. सं. 56

[2] खुली हुई खिड़की, पृ. सं. 71

[3] उधड़न, पृ. सं. 59

[4] उधड़न, पृ. सं. 63

इस प्रकार उधड़न केवल व्यक्तिगत संबंधों की कहानी नहीं है, बल्कि यह आधुनिक सभ्यता में प्रेम और विवाह की जटिलताओं का यथार्थ चित्रण भी है।

एक परिवार की मूल धुरी मां होती है। वह पूरे परिवार की सांस्कृतिक, भावनात्मक और नैतिक आधारशिला भी बनती है। माता का स्नेह, त्याग एवं प्रेम परिवार को एक बंधन में बांधे रखता है। 'बसरा की गलियां' उपन्यास में नायक आकाश नौकरी की खोज में इराक जाता है। उसकी मां अपनी चूड़ियां गिरवी रखकर पैसों का इंतजाम करती है।

'कमरा नंबर 909' की सुधा अपने पति एवं बच्चों की देखभाल करती है। पति कोरोना पीड़ित होने के कारण अस्पताल में भर्ती है। सुधा पूरे परिवार को संजोकर रखती है और बच्चों तथा पति को हर हाल में चिंता मुक्त रखने का प्रयास करती है। उसके बच्चे पिता से कहते हैं, "असल में मेरे मुंह से बात निकल गई है। वैसे ममा ने आपसे बताने के लिए मना किया था। ममा कहती थी कि पापा को अस्पताल में किसी तरह की टेंशन नहीं देनी है। उनका मनोबल हर हाल में ऊंचा ही करके रखना है। उसे टूटने नहीं देना। हम सब लोग हैं न घर के मोर्चे पर लड़ने के लिए और वहां वह अकेले ही जिंदगी और मौत से संघर्ष कर रहे हैं।[5] स्पष्टतः अजय शर्मा के उपन्यासों में मां के वात्सल्य रूप के चित्रण के साथ उसके कर्तव्यों के प्रति जागरूकता का भी सफल चित्रण मिलता है।

अजय शर्मा के उपन्यासों में परिवार के सदस्यों में मधुरता भी है और अर्थाभाव के कारण कटुता एवं तनाव को भी बराबर महसूस किया जा सकता है। माता-पिता अपने जीवन का हर क्षण संतान के भविष्य को संभालने में लगा देते हैं। उनके लिए बच्चों की भलाई ही सबसे बड़ा उद्देश्य होता है लेकिन वही संतान जब ऊंचे पद और साधनों से संपन्न हो जाती है, तो अक्सर माता-पिता उनके जीवन से पीछे छूट जाते हैं। व्यस्तता और स्वार्थ के बीच बुजुर्ग माता–पिता का महत्व कम हो जाता है। आज की पीढ़ी अपने सुख सुविधा के लिए माता-पिता को साथ रखती है परन्तु उनके प्रति आदर और सच्ची देखभाल का भाव कहीं खो जाता है। वे न तो उनके सुख–दुख में सहभागी बन पाते है और न ही उनके अनुभवों को सुनने का धैर्य रखते हैं। परिणामस्वरुप जीवन के मूल्यों की जड़ें कमजोर पड़ जाती हैं और परिवार का स्नेहिल वातावरण धीरे-धीरे धुंधला हो जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

बेदी, हरमहेंद्र सिंह एवं जितेंद्र, सुधा (संपा.). *डॉ. अजय शर्मा का कथा संसार*. साहित्य सिलसिला प्रकाशन, जालंधर, 2010

शर्मा, अजय. *चेहरा और परछाई*. मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली, 2001

शर्मा, अजय. खुली हुई खिड़की, मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली, 2002

शर्मा, अजय. *उधड़न*. बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2020

शर्मा, अजय. *कमरा नंबर 909*. बोधि प्रकाशन, जयपुर, 2021

शर्मा, अजय. *बसरा की गालियां*. के. के. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2023

[5] कमरा नंबर 909 पृ. सं. 76